International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(1): 126-127
www.educationjournal.info
Received: 13-11-2021
Accepted: 26-12-2021

कुमारी चायना दे
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
राधा गोविन्द यूनिवर्सिटी
रामगढ, बोकारो, झारखण्ड, भारत

डॉ अंजू तिवारी
प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग
राधा गोविन्द यूनिवर्सिटी
रामगढ, बोकारो, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
कुमारी चायना दे
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग
राधा गोविन्द यूनिवर्सिटी
रामगढ, बोकारो, झारखण्ड, भारत

बच्चे के समायोजन में माता–पिता की भूमिका

कुमारी चायना दे, डॉ अंजू तिवारी

Abstract
बच्चे के समायोजन में माता–पिता की भूमिका सबसे अहम होती है। बच्चे जो सीखते है अपने घर परिवार के वातावरण से सीखते है और उनको सिखाने वाले माता दृ पिता ही होते है। बच्चे माता–पिता के द्वारा अच्छे–बुरे की पहचान करना लोगो के बीच खुद को व्यवस्थित करना आदि सभी व्यवहार को सीखते है और अपनाते है। हर परिस्थिति में खुद को मजबुत बनाएँ रखना सबो के बीच एक अच्छे समायोजन की पहचान है जो बच्चे और कही से नहीबल्कि अपने माता–पिता से ही सीखते ळें।

Keywords: माता–पिता की भूमिका, समायोजन, बच्चों का व्यवहार, माता–पिता का प्रयास।

Introduction
बच्चे के पालन–पोषण से लेकर उसके संपूर्ण विकास में माता–पिता की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। बच्चे का विकास माँ के गर्भ से ही प्रारंभ हो जाता है और माता–पिता इस समय से ही उसके सही विकास की दिशा में अपना संपूर्ण धयान केंद्रित कर देते है। वर्तमान समय में माता–पिता बनना तो आसान है परंतु उसके दायित्वों का निर्वहन करना उतना ही मुश्किल है और उससे भी अधिक कठिन बच्चों का सर्वागीण विकास करना। सर्वागीण विकास से तात्पर्य बच्चों का शारीरिक, मानसिक, संवेदनात्मक विकास उनकी आयु के अनुरूप हो। और इसी विकास में समायोजन का भाव भी छिपा होता है जो उसे जीवन के सभी सफलता को प्राप्त करने में मदद करता है। बालक को माता–पिता से जो प्रत्यक्ष व्यवहार मिलता है वह उनके मानसिक जीवन के कुछ स्थाई अस्थाई आशाएं–निराशाएं एवं कुछ भावनाओं का निर्माण करता है। यदि बालक को माता–पिता से उपेक्षा एवं तिरस्कार प्राप्त होता है। तो वह समाज विरोधी मूल्यों का विकास कर लेता है। आज के बच्चे अपना जीवन अपने अंदाज में व्यतीत करना चाहता है इसमें किसी का हस्तक्षेप करना उसे पसंद नहीं है। इस जीवन जीने की कला मे वह आने वाली युवा पीढ़ी उनके दायित्वों की बारे मे जिम्मेदार नहीं हो पाएंगे अपनी जिम्मेदारियों से बचने का भी प्रयास करते हैं। इसका प्रतिकूल प्रभाव परिवार और समाज पर पड़ता है। अभिभावक का मार्गदर्शन बच्चों के जीवन जीने की शैली को बहुत हद तक प्रभावित करता है। हमें उनकी भावनाओं को समझते हुए उनके दायित्व के प्रति उन्हें जागरूक करना होगा। ऐसा नहीं करते हैं तो आने वाली युवा पीढ़ी अपने समाज राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों की बारे मे जिम्मेदार नहीं हो पाएंगे।

आज के भौतिकवादी, व्यक्तिवादी और सुखवादी समय में व्यक्ति ६ बच्चा उपरोक्त प्रवृत्ति के कारण पैसे के पीछे इतना भाग रहा है की वह अपने के कर्तव्यों को भूलता जा रहा है। माता–पिता और बच्चों का रिश्ता भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है। आज के बच्चे यह चाहते हैं की माता–पिता उनके किसी कार्य (यहाँ तक की पढाई में भी) में हस्तक्षेप न करें जबकि माता–पिता उनकी भलाई के लिए ही उनके कार्यों पर निगाह रखना चाहते हैं। परिणाम स्वरुप दोनों में मतभेद हो जाता है। यह देखा जाए तो कहा जा सकता है की आज की इस परिस्थिति में समायोजन माता–पिता तथा घर के बड़े सदस्यों को अपेक्षाकृत अधिक करना पड़ता है, क्यूंकि वे अधिक समझदार ६ जिम्मेदार होते है। यदि मनोविज्ञान की परिभाषा में कहा जाये तो कहा जा सकता है की उनके ऊपर इगो का विकास अधिक हो रहा है। जो भी हो यह देखा जाता है की कष्ट परेशानी उसी को होती है जो अपनी जिम्मेदारी समझते है। इस जिम्मेदार सदस्य के रूप में माता–पिता का दायित्व सर्वाधिक होता है। उनका दायित्व आज की इस परिस्थिति ६ समय में और बढ़ जाता है की वे वर्तमान समय और परिस्थिति को समझकर अपने बच्चों के साथ यथोचित व्यवहार करें और उसमें विधमान क्षमताओं को पहचानें और उसको विकसित करने में अपना अमूल्य योगदान दें।

बच्चों में विधमान क्षमताओं की पहचान विशेषज्ञों से करायें। फिर उसके विकास का प्रयास करें। इसके लिए सप्ताह में किसी दिन उनके कार्यों को प्यार से बुलाकर देखें और पूछें कि अध्ययन हेतु जो भी समस्या हो उसे बताओ। समस्या जानने के बाद प्रसन्ना के साथ उसे दूर करने में मदद करें। बालक पर किसी कार्य के लिए अधिक दबाव न बनायें। उसे केवल उसके कर्तव्य का एहसास करायें। उसे ऐसे उदाहरण बतायेंदिखायें कि बड़ोंध्माता–पिता की सलाह को मानना उसके लिए

हमेशा उचित होगा। जो लोग अपने कर्तव्य को समझते हैं वे ही अपने जीवन में सफल होते हैं। माता–पिता हमेशा बच्चों को उनके कर्तव्य का ही बोध करते हैं।

आज के आधुनिक समय में बच्चों का अत्यधिक समय टेक्नोलॉजी दुनिया में ही केंद्रित हो गया है। चाहे वह शिक्षा के लिए हो या उसके मनोरंजन या किसी भी आयाम के लिए परिवार से संपर्क उनका काफी कम हो गया है जिसके कारण उनमें अच्छे संस्कारों की कमी के कारण उठना बैठना बोलना बड़ों का आदर–सत्कार, माता–पिता, गुरुजनो के सम्मान में रूचि नहीं रह गई है। इन सब का एकमात्र कारण माता–पिता के समय अभाव एवं संयुक्त परिवार को कम होना है। हर माता–पिता का इच्छा होती है उनके बच्चे शिक्षित हो आदर्शवाद दायित्व पूर्ण बने संस्कारी बने और इन सब के लिए व शिक्षक और विद्यालय को उत्तरदायित्वों समझते है परन्तु वास्तविक प्रयोगशाला तो घर और परिवार है। जहाँ बच्चो के वयवहार एवं संस्कारो का वास्तविक प्रयोग होता है। बच्चो के इस वयवहार को सही मार्गदर्शन और वयवहारिक रूप परिवार के सदस्य माता–पिता ही देते है। अन्तः समाज एवं विद्यालय के हर बच्चे को सुसंस्कृत एवं संस्कारी बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे वह देश एवं समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके। एक जिम्मेदार नागरिक के अंदर समायोजन के सभी गुण समाहित होते है। जिसके तहत वह अपनी सभी जिम्मेदारियों को समझते हुए बखूबी इसे निभाते है।समायोजन एक ऐसी अवस्था है जो बच्चे के जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है। चाहे वो सामाजिक हो आर्थिक हो वयवसायिक, राजनैतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक आदि सभी पक्ष इसमें सम्मिलित है।

इन सभी क्षेत्रो में सफलता प्राप्ति के लिए उसे समायोजन की आवश्यक्ता पड़ती है। समायोजन एक ऐसा आधार है जिसके माध्यम से बालक अपने जीवन के सभी क्षेत्रो में सफलता हासिल कर सकता है। और यह समायोजन बच्चे में उसके परिवार अर्थात माता पिता के द्वाराआता है।माता पिता अपने बच्चों में यह गुण विभिन्न संस्कारो एवं निर्देशनो द्वारा बच्चों में विकसित करते हैं। बच्चे और कही से नहीं बल्कि अपने घर परिवार और अपने माता पिता द्वारा ही यह सीखते हैं कि उसे कहाँ–कैसे लोगों के बीच रहकर अपना कार्य करना है।

निष्कर्ष

अन्तः हम कह सकते है की बच्चो के समायोजन में उसके माता पिता की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती हैजन्म से लेकर हर अवस्था में अभिभावक विभिन्न दिशा निर्देशन के माध्यम से इस गुण का विकास उसके अंदर करते हैंताकि जीवन के किसी भी सफलता एवं उदेश्यो को प्राप्त करने में उसके समक्ष कोई कठिनाई नआये। जीवन की हर वह सफलता को मनुष्य समायोजन के माध्यम से ही प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ

1. शर्मा, डॉक्टर सरोज (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, जयपुरः श्याम प्रकाशन.
2. पांडे, रामशकल (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.
3. पाठक, पी. डी. (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तकमंदिर.
4. सिंह, अरुण कुमार (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः भारती भवन.
5. शर्मा, आर. ए. (2009) शिक्षा अनुसंधान, मेरठः आर लाल नुक डिपो.
6. सिंह, विवेक (2017) किशोरावस्था के विधार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़नेवाले प्रभाव का अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल मल्टीडिसिप्लिनरी, 2(5), 71–83.
7. निवेदिता (2017) स्टडी ऑफ पैरेंटल इन्करेजमेंट इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट इंटरनेशनल जर्नल मल्टीडिसिप्लिनरी, 5 (3), 33–36 .
8. भगत, पूजा (2016) माध्यमिक स्कूल के लड़के और लड़कियों के बीच समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल अप्लाइड रिसर्च, 2 (7), 91–95 .
9. देती, निर्मला (2011) छात्रों के व्यक्तिगत और उपलब्धि के प्रेरणा के संबंधों में अध्ययन, भारतीय इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च 1 (1) 22–29 .
10. कुमार एवं सिंह (2005) ग्रामीण एवं शहरी किशोरों के व्यक्तित्व के समायोजन का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 4 (3) 56–75